ISSN 2349-137X

लोक

(प्रतिध्वनि कला संस्कृति की)

26. सुगम संगीत में ताल की उपयोगिता एवं ताल के विविध स्वरूप — सुकन्या वर्मा 144

थाती

27. राजस्थानी लोकनाट्य व लोकनृत्य में संगीत — डॉ. शशिकला राय 151
28. गुरू पूर्णिमा पर बिरहा अखाड़ों म दिखता है अद्भुद दृश्य — डॉ. धनंजय चोपड़ा 159
29. लोकगीतों में गंगा : सहरसा के संदर्भ में — डॉ. कुमारी कंचन 163
30. लोकगीतों की ऐतिहासिकता एवं भविष्य का अध्ययन — डॉ. पूनम तिवारी 166
31. लोक नाट्य का स्वरूप एवं विकास : एक विवेचन — साक्षी श्रीवास्तव 169

शास्त्र

32. अभिनेता और प्राचीन ग्रन्थों में उनकी सामाजिक स्थिति (नाट्य एवं संगीत के संदर्भ में) — डॉ. नमिता यादव 177
33. शास्त्रीय संगीत का स्वरूप-विवेचन — डॉ. शिव नारायण मिश्र 184

सामायिकी

34. नारी अस्मिता का दर्प और रेणु की कहानियां — डॉ. शबनम तब्बसुम 193
35. साहित्य और संस्कृति की समकालीन चुनौतिया — डॉ. नवाब सिंह 201
36. Sanctity of Languages and Sanity of Socio-linguistics — Dr. Manisha Patil 208
37. कोरोना काल म भारतीय संगीत : दशा और दिशा — शिव शम्भू कपूर 215
38. संगीत शिक्षा और रोजगार — टोपराज सिंह पटेल 220

सौन्दर्य

39. चित्रपट संगीत और रस — कुमारी ज्योति 229

व्यक्तित्व

40. T. Lakshmana Pillai — The multi-faceted composer from Kerala — Dr Bindu K 233
41. संगीत-कला के क्षेत्र में काजी नज़रूल इस्लाम का योगदान — रूमा चक्रवर्ती 236

अनुभूति

42. संस्मरण: वचपन की हरथ — अग्निशेखर 243
43. नगरवधुओं के घुंघरुओं से पूरी रात झंकृत होते महाशमशान में एक नयी परम्परा का आरम्भ — अंकिता खत्री 247
44. कथक नृत्य में संगीत और साहित्य की भूमिका पद्मविभूषण पं. बिरजू महाराज, गुरु राजेन्द्र गंगानी, विदुषी शास्वति सेन और विदुषी वास्वति मिश्रा से की गई बातचीत के महत्वपूर्ण अंश — रक्षा सिंह 251

प्रकीर्णक

45. शैलेन्द्र के समकालीन गीतकार : राजेन्द्र कृष्ण और प्रेम धवन — डॉ. आशुतोष बाजपेयी 257
46. Classical music and Film Music — Dr. S Seethalakshmi 260
47. राग ध्यान एवं राग-रागिनि चित्रों पर शोध की संभावनाएँ — डॉ. निशा पाठक 262
48. संगीत एवं मनोविज्ञान का अर्न्तसम्बन्ध — शशी रॉय 268

समीक्षा

49. ठुमरी की टनक और ठसक का दस्तावेज़। — डॉ. मनीष कुमार मिश्रा 273
50. ब्रज क्षेत्र के लोक संगीत में गुंजरित अवनद्ध वाद्य — गायत्री 276
51. Shiv Shakti & Sangeet — Tanushree Kashyap, Dr.Ambika Kashyap 281
52. Harmonium - Facts and Misconceptions — Upendra Vasudeo Sahasrabuddhe 284

Shiv Shakti & Sangeet

Tanushree Kashyap

Dr.Ambika Kashyap
Asst. Professor
G.N.G College YNR

भारतीय संगीत एक भावानात्मक एकता भी है और आध्यात्मिक इकाई भी। इससे न केवल भारत अपितु समस्त विश्व में एक प्रकार की भावानुभूति को व्यक्त करने वाली ध्वनियों में एकता, साम्य एंव सानुकूलता के दर्शन होते है। पारस्परिक प्रेम सौहार्द, भक्ति - भाव तथा अध्यात्म का मार्ग अपनाते हुऐ भारतीय संस्कृति निरन्तर सुदृढ़ होती रही है। इन मूल्यों की स्थापना में संगीत का सर्वाधिक महत्व एवं योगदान रहा है। भारतीय संस्कृति की जो परम्परा संदियो से चली आई उसी से सभी कलाओं का प्रतिपादन हुआ।

मानव जीवन के तीन शाश्वत मूल्य 'सत्यं शिवम् सुन्दरम्' संस्कृति एंव धर्म के आधार स्तंभ है। संगीत में भी इन मूल्यों को अंतरनिहित माना गया। अर्थात ये तीनो तत्व धर्म के अतिरिक्त, संगीत के भी आधार स्तंभ है। इस एक शब्द में भारत, भारतीयता, भारतीय सभ्यता, संस्कृति और संगीत की मूल भावना समाहित है। इसके मध्य में शिव है, अर्थात् सत्यता और सुंदरता का दायित्व शिवत्व पर है। तात्पर्य यह है कि शिव ही सत्य है और शिव ही सुदंर है। शिव पुराण के अनुसार, शिव - शक्ति का संयोग ही परमात्मा है। शिव की जो पराशक्ति है, उससे चित शक्ति प्रकट होती है। चित शक्ति से आनन्द शक्ति का प्रादुर्भाव होता है आनंद शक्ति से इच्छा शक्ति का उद्भव हुआ है और इच्छा शक्ति से ज्ञान शक्ति और ज्ञान शक्ति से पाँचवी क्रिया शक्ति प्रकट हुई है। इन्हीं से निवृति आदि कलाएँ उत्पन्न हुई हैं। चित शक्ति से नाद और आनंद शक्ति से बिंदु का प्राकटय बताया गया है इच्छा शक्ति से 'मकार' प्रकट हुआ है। ज्ञान शक्ति से पाँचवा स्वर 'उ'कार उत्पन्न हुआ है और क्रिया शक्ति से 'अ'कार की उत्पति हुई है। इस प्रकार प्रणव (ऊँ) की उत्पत्ति हुई है।

कला के अध्यात्मिक स्वरूप पर विचार करने वाले प्राचीन मानीषियों ने ' महामाया का चिन्मय विलास ' कहा है। जिसका वर्णन पूर्णिमा पाण्डे ने इस प्रकार किया

क्रीड़ा ते लोक रचना सखा ते चिन्मय : शिवः ।
आहास्ते सदानन्दो वासस्ते हृदय सताम् ।।

अर्थात माना गया है कि प्रलय काल में महाशिव निषक्रिया रहते हैं। जब उनको लीला की लालसा होती है तो शक्ति रूपा महामाया जगत को प्रपंचित करती है। शिव की लीला-सखी होने के कारण महामाया को 'ललिता' कहा जाता है लोक रचना उसकी क्रीड़ा है।

प्राचीन शैव सिद्धान्तो में कला का प्रयोग माया के कंचुक के रूप में हुआ है इसे कला का स्थूल रूप भी माना गया है। जिसके अनुसार कला शिव के रूप में, रेखा में, अनन्त नाद मे मूर्त भाव प्रकाशित करने वाली मानसी शक्ति है। शिव के लिए जो सृष्टि रचना की प्रेरणा हैं, वही उनकी लीला सखी महामाया ललिता ही समस्त कलाओ की जननी है।

क्योंकि विश्व में व्याप्त वह सृजनात्मक शक्ति ललिता ही अपने व्यक्ता स्वरूप में सत्पुरूषों एवं

कलाकारो के हृदयों में निवास करती है। जब शिव अपने रूप को माया से निग्रहीत करके संपूर्ण पदार्थों को ग्रहण करने लगते है, तब उनका नाम पुरूष होता है। शिव परम तत्व है। उनके कार्यों में संहार के अतिरिक्त सृष्टि और पालन के कार्य भी सम्मिलित है। शिव परम कारुणिक भी है और उनमे अनुग्रह अथवा प्रसाद तथा तिरोभाव की क्रिया भी पाई जाती है। शिव विभिन्न कलाओं और सिद्धिओं के प्रवंतक भी माने गये है। संगीत, नृत्य, योग, व्याकरण, व्याख्याने आदि के मूल प्रवंतक शिव ही है। शिव सभी देवताओ मे श्रेष्ठ कहे गये हैं। इनमे माया की अनन्त शक्ति है।.....

पुष्पेराज जी के अनुसार :- शुद्ध चैतन्य की स्वतन्त्र शक्ति को ही देवी या शक्ति कला कहा गया है शैवदर्शन के मतानुसार शक्ति अखण्ड, अव्यक्त शिव का एक अभिन्न अंग है।

हिन्दू शैव धर्म में, विशेषकार प्रत्यभिज्ञानदर्शन में कला सौन्दर्य, संगीत आदि में स्तोत्रे का प्रत्यक्ष, व्यापक एवं रहस्मय वितरण मिलता है। इस दर्शन के अनुसार शिव आत्म - क्रीड़न की इच्छा से प्रेरित होकर अपनी महामाया शक्ति से विश्व की रूप रचना एंव श्रृंगार करते है -

"मायाशक्ति कृतपूर्णस्वरूपारव्यतिमय
चितकार्यता पन्न स्वरूपप्रसरणसात प्रभो "

अर्थात प्रकाश या संविद अवस्था आत्मा की स्वरूप विश्रान्ति की अवस्था है। यही आनन्द या रस है, शिव का द्रवीभूतरूप शक्ति के संयोग से इस द्वारा विश्व रूप धारण करता है। इसमें छत्तीस (36) तत्वो में से कला को एक तत्व मानकर उसकी विशद् व्याख्या की गई है। समस्त भारतीय कलाओं पर शैव दर्शन का प्रभाव आरम्भ से ही लक्षित होता है। संगीत, मूर्ति, चित्र और वास्तु तथा नाटयादि कलाओं को भगवान शिव की प्रकल्पना से सबसे अधिक प्रेरणा मिली।

शैव मतानुसार बिन्दु को सृष्टि की उत्पति का कारण माना गया है। बिन्दु नादात्मक शब्द रूप मे व्यकत होता है। सन्त कवि इसे शब्द साधना तथा संगीत इसे नाद साधना कहते है। यह शब्द नादात्मक है। संपूर्ण विश्व मे नाद स्फुरित होकर ध्वनित हो रहा है। यही नाद वर्णो का रूप धारण करता है। अ से ह तक वर्ण स्थूलता प्राप्त करते हैं और स्वर, स रे ग म प ध नि - रंजकता को नाद आकाश का रूप धारण करके 4 अन्य भूतों के रूप मे बदल जाते है। नाद की महिमा के कारण ही योगी नाद अनुसंधान करके सूक्ष्मतम् बिंदु को प्राप्त करते हैं और शिव शक्ति की ऐक्यरूपिणी "बैन्दव" अवस्था को प्राप्त करते है।

शैव तथा शाकत स्तोत्रें के प्रणेता के रूप मे दुर्वासा ऋषि की ख्याति का उल्लेख शास्त्रें में उपलब्ध होता है। इनके स्तोत्र का नाम 'परशम्भुमहिम्नः स्तव' है। इसमे संगीत का आधार तत्व श्रुति शब्द से आरम्भ होता है। संगीतज्ञ लंकेश्वर रावण द्वारा विरचित शिव स्तुतियाँ 10 पद्यो की है। इनमें लयात्मक पद्वद्धता का पूर्ण ध्यान रखा गया है। आदी गुरू अद्वैतावादी वादि शंक्राचार्य ने शिव महिमा तथा शिव के सुन्दर अंगो का वर्णन किया है।

शैव और शाक्त परम्पराओ मे याष्टिक दुर्गा, आंजनेय में भी शिव तथा उनकी शक्ति दुर्गा की स्तुतियाँ हैं। इनका अनुकरण पं. लोचन ने 'राग -तंरगिणी मे ओर पं. दामोदर ने 'संगीत दर्पण' मे किया है। इन्ही परम्पराओं का अनुकरण तेहरवी शताब्दी के प. शांरगदेव ने संगीत - रत्नाकर' मे रागोत्पति और रागविवरण प्रकरणों में किया है। उन्होंने अपने पूववर्ती प्रवर्तक राजाओं का नामोल्लेख भी किया है। और उन्हें संगीत विशारद कहकर संबोधित किया है। रागों के लिंग - भेद उनके लक्षण संगीत संस्कृति की एक विलक्षण परम्परा है। सामान्य व्यक्ति को चाहे संगीत के सम्बन्ध में कोई जानकारी न हो किन्तु वे भी सात स्वर, तीन ग्राम, इक्कीस मूचर्छना, छ : राग और छत्तीस रागिनियों से अवश्य ही परिचित होते हैं। विभिन्न ग्रन्थकारों - कोहल, मतंग, दामोदर पंडित, महाराणा कुम्भा, सोमनाथ आदि ने रागों में देवी - देवता

- दर्पण' के एक, श्लोक में भैरव - राग के ध्यान द्वारा शिव का स्मरण किया गया है।

''गंगाधर : शश्किलातिलक स्त्रिनेत्रः।
सर्व विभूषिततनृगजतिः वास :।
भास्वत्त्रिशूलकर एवं नृमुंडधारी।
शुभ्राम्बरो ज्यति भैरव आदि रागः।

अर्थात जिसके मस्तक से गंगा बहती है, जिनके मस्तक मे चन्द्रकला का तिलक है, जिनके तीन नेत्र हैं, जिनके शरीर पर सर्प विराजमान है, जिन्होंने अपने शरीर पर हस्तिचर्म धारण किया है, जिसके हाथ मे त्रिशूल और गले में मुण्डमाला है और जो श्वेतवस्त्र धारण किये है, ऐसा आदि भैरव राग है। इसमें भैरव राग के गंभीर तथा रूद्र भाव को उसके प्रतीकात्मक देवता द्वारा व्यक्त किया गया हैं। संगीत - दर्पण (श्लोक 160 -62) में भगवान शिव के पाँच मुखों से पाँच रागों तथ पार्वती जो के मुख से छठे राग नट नारायण को निकला हुआ माना गया है।

शिव शक्ति समायोगाद्रागाणां सम्भवो भवेत्।
पन्चास्यात पन्चरागाः भ्युः वष्ठन्तु गिरिजामुखात्।
मधौव कान्तु श्री रागो वामदेवाद्धसन्तकः
अधोरात् भैरवोद्भूत पुरूषात पन्वमो भवेत्।।
इशनाख्यान्मेधरागो नाद्यारम्भे शिवाद्भूत।
गिरिमाया मुखाल्लसये नटनारायणी भवेत्।।

अर्थात शिव के साद्योजात मुख, वाम मुख तथा अघोर मुख से वाम मुख से 6 राग था 36 रागिनियां प्रकट हुई जिनका विस्तृत वर्णन राग - रागिनी वर्गीकरण के सोमेश्वर मत मे मिलता है। इस श्लोक की व्याख्या स्वामी प्रज्ञानन्द जी ने भी की है। उन्होनें शिव - शक्ति के सिद्धान्त का दार्शानिक विशलेषण करते हुऐ उसे जन्य - जनक पद्धति का आधार माना है।

"The philosophical concept of Siva Sakti principal has its roots in the notion of the related and the relation, which means, the cause and the effect. Everything material or mental-gross or subtle has a casual, relation between antecedence and the precedence. When an event is followed by another event, we call the former a cause and the later and event. The cycle of cause and efforts designed the world of appearance. When music first appeared in the human world in the primitive society men did neither bother their heads about its problem of origin on its cause and so no philosophical idea did grow at the time, behind the art & culture of music

संदर्भ

वाक्यपदीय, पुष्पराज 1-31

आचार्य उत्पताचार्य वृत्त शिव दृष्टिअ - वृति पृ0 13

A Historical study of India music, Swami Prajnananda Pg-412

ठाकुर जयदेव सिंह , संगीत कला विहार , नवम्बर 1944